CHAPTER - 10
बड़े भाई साहब

प्रश्न अभ्यास

खंड – क

प्रश्न 1:
छोटे भाई ने अपनी पढ़ाई का टाइम–टेबिल बनाते समय क्या–क्या सोचा और फिर उसका पालन क्यों नहीं कर पाया?

उत्तर 1:
बड़े भाई की लताड़ सुनकर छोटे भाई ने अपने पढ़ने का टाइम–टेबिल बनाया जिसमें अपनी सुविधानुसार सुबह छः बजे उठना, नाश्ता करना, पढ़ने बैठना ,छह से आठ अंग्रेजी , आठ से नौ हिसाब , नौ से साढ़े नौ तक इतिहास फिर भोजन और स्कूल। स्कूल से आने के बाद फिर पढ़ना मगर मैदान की सुखद हरियाली और खेल आदि के मोह के कारण वह अपने टाइम–टेबिल पर अमल नहीं कर पाया ।

प्रश्न 2:
एक दिन जब गुल्ली–डंडा खेलने के बाद जब छोटा भाई बड़े भाई के सामने पहुँचा तो उनकी क्या प्रतिक्रिया हुई ?

उत्तर 2:
एक दिन गुल्ली–डंडा खेलने के बाद जब छोटा भाई बड़े भाई के सामने पहुँचा तो बड़े भाई साहब लंबा–चौड़ा भाषण देने लगे उन्होंने समझाते हुए का कि कक्षा में प्रथम आने पर घमंड मत करो अभी छोटी कक्षा हो जब बड़ी कक्षा में आओगे तब अलज़बरा, अंग्रेजों का इतिहास आदि से दिमाग घूम जाएगा । असल चीज है बुद्धि का विकास जो बड़े होने के साथ होता है और मैं तुमसे बडा हूँ ।

प्रश्न 3:

बडे भाई साहब को अपनी इच्छाएँ क्यों दबानी पड़ती थीं ?

उत्तर 3:

बड़े भाई साहब अपने बड़प्पन के कारण अपनी बहुत सी इच्छाओं को दबाकर रह जाते थे। उनका मानना था कि यदि वह कुछ गलत काम करेंगे तो छोटे पर क्या असर पड़ेगा । छोटे भाई की देखभाल करना उनका कर्तव्य था । वह पढ़ते रहते थे जिससे छोटा भाई भी उन्हें देखकर पढ़े। ज्यादा खेलते भी नहीं थे ।

प्रश्न 4:

बड़े भाई साहब छोटे भाई को क्या सलाह देते थे?

उत्तर 4:

बड़े भाई साहब छोटे भाई को सलाह देते थे कि वह मन लगाकर पढ़े, खेलकूद में समय नष्ट न करे क्योंकि पढ़ लिखकर ही बड़ा आदमी बना जा सकता है । और समाज में अपना अच्छा स्थान बनाया जा सकता है।

प्रश्न 5:

छोटे भाई ने बड़े भाई साहब के नरम व्हवहार का क्या फायदा उठाया ?

उत्तर 5:

बड़े भाई साहब नसीहतें देने के बाद भी बार –बार परीक्षा में फेल होते रहे और छोटा भाई हमेशा प्रथम आता रहा । इस कारण वह स्वच्छंद होता गया उसे घमंड होने लगा वह थोड़ा बहुत पढ़ता था उसने वह भी बंद कर दिया वह पतंग उड़ाने लगा , माँझा देना , कन्ने बाँधना पतंग टूर्नामेंट में हिस्सा लेना आदि तैयारियाँ करने लग गया ।

खंड – ख

प्रश्न 1:

बडे भाई की डाँट–फटकार अगर न मिलती , तो क्या छोटा भाई कक्षा में अव्वल आता ? अपने विचार प्रकट कीजिए ।

उत्तर 1:

छोटा भाई चंचल स्वभाव का था उसका मन खेलकूद में ज्यादा लगता था। वह पढ़ने में तेज होने के साथ–साथ घूमने–फिरने में ज्यादा समय व्यतीत करता था । इसी बात पर बड़ा भाई उसे डाँटता था । जिनके डर से वह पढ़ने बैठ जाता था बड़ा भाई समय–समय पर उसे घमंड न करने की सलाह देता था । इसी डर और शिक्षा के कारण वह हमेशा कक्षा में अव्वल आता था ।

प्रश्न 2:

इस पाठ में लेखक ने समूची शिक्षा के किन तौर–तरीकों पर व्यंग्य किया है ? क्या आप उनके विचार से सहमत हैं ?

उत्तर 2:

लेखक ने समूची शिक्षा के तौर–तरीकों पर व्यंग्य करते हुए कहा है कि –

- यह शिक्षा व्हावहारिक नहीं है । यह रटंत शिक्षा है ।
- यहाँ केवल उत्तर पुस्तिका के आधार पर मूल्याँकन होता है ।
- निरर्थक विषयों की पढ़ाई करवाई जाती है ।
- हम उनके विचारों से पूर्णतः सहमत हैं ।
- क्योंकि इस प्रक्रिया में छात्र का पूर्ण मूल्याँकन नहीं हो पाता ।

प्रश्न 3:

बड़े भाई साहब के अनुसार जीवन की समझ कैसे आती है ?

उत्तर 3:

बड़े भाई साहब के अनुसार जीवन की समझ अनुभव से आती है । चाहे कितनी भी डिग्रियाँ ले ली जाएँ यदि अनुभव न हो तो सारी डिग्रियाँ बेकार हैं । दुनिया की समझ अनुभव और उसे देखकर आती है , जिसके लिए बड़ा होना अनिवार्य है इसीलिए बड़े बुजुर्ग केवल अपने अनुभव के आधार पर ही बड़ी से बड़ी समस्या का हल आसानी से निकाल लेते हैं अपने हैडमास्टर का उदाहरण देते हुए वे कहतें हैं कि पढ़े–लिखे होने के बाद भी उनके घर का खर्च उनकी माँ चलाती हैं । उनसे पहले पाँच हजार में घर का खर्च न चलता था । माँ के हाथ में आने के बाद उन्हें आसानी हो गई है ।

प्रश्न 4:

छोटे भाई के मन में बड़े भाई साहब के प्रति श्रद्धा क्यों उत्पन्न हुई ?

उत्तर 4:

बड़े भाई हमेशा अपने छोटे भाई को डाँटते रहते थे , लेकिन जब उन्होने अपने छोटे भाई को जीने का सही तरीका बताया तो छोटे भाई के मन में अपने बड़े भाई के प्रति श्रद्धा उत्पन्न हो गई । उन्होने बताया कि तुम्हारे और मेरे बीच में जो पाँच साल का अंतर है उसको खुदा भी नहीं मिटा सकता । ज़िंदगी का तजुर्बा मेरा तुमसे ज्यादा है । जीवन को चलाने के लिए अनुभव चाहिए वह भी मेरा तुमसे ज्यादा है इसलिए आज भी मेरा तुम पर पूरा अधिकार है यह बात सुनकर लेखक ने सिर झुका लिया ।

प्रश्न 5:

बड़े भाई साहब की स्वभावगत विशेषताएँ बताइए।

उत्तर 5:

बड़े भाई साहब बहुत ही परिश्रमी थे दिन रात पढ़ाई करते रहते थे पर भाग्य में उत्तीर्ण होना न लिखा था वे अपने छोटे भाई के कारण बाल सुलभ खेल भी नहीं खेलते थे । वे अपने छोटे भाई को उपदेश देते रहते थे और अपनी इस कला से अपने छोटे भाई को नतमस्तक होने पर मजबूर कर देते थे । वे अपने छोटे भाई से पाँच साल बड़े थे इसलिए विभिन्न तर्क देकर अपने छोटे भाई को अपने अनुभव और समझ से प्रभावित कर देते थे।

प्रश्न 6:

बड़े भाई साहब ने ज़िंदगी के अनुभव और किताबी ज्ञान में से किसे और क्यों महत्वपूर्ण कहा था ?

उत्तर 6:

बड़े भाई साहब ने ज़िंदगी के अनुभव और किताबी ज्ञान में से ज़िंदगी के अनुभव को महत्वपूर्ण बताते हुए कहा कि किताबी ज्ञान से केवल जानकारी प्राप्त की जा सकती है ज़िंदगी का सामना करने और परिस्थितियों से जूझने का तरीका और दुनियादारी केवल अनुभव से आती है । अक्सर ऐसा देखा जाता है कि साधारण जीवन में शिक्षित व्यक्ति से अशिक्षित व्यक्ति ज्यादा समझदारी से काम लेते हैं ।

प्रश्न 7:

बताइए पाठ के किन अंशों से पता चलता है कि –

(क) छोटा भाई अपने बड़े भाई साहब का आदर करता है।

उत्तर क:

छोटे भाई को कनकौए उड़ाने का शौक था मगर वह अपने बड़े भाई से छिपकर कनकौए उड़ाता था ताकि उन्हें ऐसा न लगे कि वह अपने बड़े भाई का लिहाज और सम्मान नहीं करता है ।

(ख) भाई साहब को ज़िंदगी का अच्छा अनुभव है।

उत्तर ख:

बड़े भाई साहब का कहना था कि वह उम्र में पाँच साल बड़े हैं और उनका तजुर्बा कहीं ज्यादा है । वह कहा करते थे कि चाहे तुम एम. ए. और डी. फिल. क्यों न हो जाओ समझ और दुनियादारी में मुझसे कम ही रहोगे।

(ग) भाई साहब के भीतर भी एक बच्चा है ।

उत्तर ग:

एक समय की बात है कि एक कनकौआ हमारे ऊपर से गुजरा बच्चे दौड़ रहे थे बड़े भाई साहब भी लम्बे होने के कारण पतंग की डोर को पकड़कर उसके पीछे दौड़ पड़े।

(घ) भाई साहब छोटे भाई का भला चाहते हैं ।

उत्तर घ:

बड़े भाई साहब ने छोटे भाई को गले लगाते हुए कहा कि मैं कनकौए उड़ाने को मना नहीं करता मेरा मन भी करता है मगर मैं ऐसा करने लगा तो तुम्हें कैसे सही राह दिखा सकूँगा आखिर तुम्हारे प्रति मेरी जिम्मेदारी बनती है कि मैं तुम्हें सही रास्ता दिखाऊँ।

खंड – ग

आशय स्पष्ट कीजिए

1.
इम्तिहान पास कर लेना कोई चीज़ नहीं है असल चीज़ है बुद्धि का विकास ।

उत्तर 1:
1.बड़े भाई का कहना था कि केवल परीक्षा पास कर लेने से कुछ नहीं होता बुद्धि का विकास आवश्यक होता है जो किसी भी परीक्षा से नहीं होता उसके लिए तो अनुभव और मेहनत की आवश्यकता होती है।

2.
फिर भी जैसे मौत और विपत्ति के बीच भी आदमी मोह और माया के बंधन में जकड़ा रहता है , मैं फटकार और घुड़कियाँ खकर भी खेल–कूद का तिरस्कार न कर सकता था ।

उत्तर 2:
छोटे भाई की रुचि खेल–कूद में थी और बड़े भाई का सम्मान भी करना था इसलिए जैसे मौत और विपत्ति के बीच भी आदमी मोह और माया के बंधन में जकड़ा रहता है वैसी ही स्थिति लेखक की थी वह अपने बड़े भाई की डाँट और फटकार के बावजूद खेलकूद को नहीं छोड़ सकता था।

3.
बुनियाद ही पुख़्ता न हो तो मकान कैसे पायेदार बने ।

उत्तर 3:
लेखक का अपने बड़े भाई के बारे में कहना था कि वे अपने अनुभव को बढ़ाने के लिए हर कक्षा में दो–तीन साल लगाते थे क्योंकि उनके भाई के मन में ' बुनियाद ही पुख़्ता न हो तो मकान कैसे पायेदार बने ' उक्ति घर कर गई थी।

4.
आँखें आसमान की ओर थीं और मन उस आकाशगामी पथिक की ओर,जो मंद गति से झूमता पतन की ओर चला आ रहा था, मानो कोई आत्मा स्वर्ग से निकलकर विरक्त मन से नए संस्कार ग्रहण करने जा रही हो।

उत्तर 4:
यहाँ बाल मनोविज्ञान का बड़ा ही सुंदर चित्रण किया गया है, लेखक कनकौए के पीछे दौड़ रहा था उसकी आँखें आसमान पर टिकी हुईं थीं पतंग जब नीचे आ रही थी तब ऐसा लग रहा था कि मानो कोई आत्मा स्वर्ग से निकलकर विरक्त मन से धरती पर नए संस्कार ग्रहण करने जा रही हो ।